PRIVATE CIRCULATION ONLY

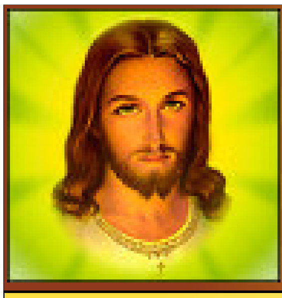

दिव्य ज्योति

फरवरी 2009 ISSUE 0209 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

"जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करे।"

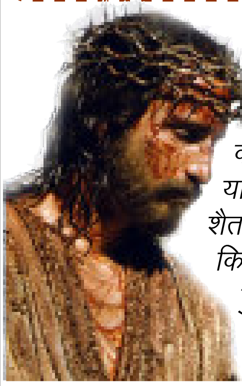

क्या आप यह मानते हो कि **प्रभु येशु** ईश्वर के एकलौते पुत्र हैं? यदि हाँ, तो यह जान लें शैतान भी यही मानता है कि वह ईश्वर के एकलौते पुत्र/ परमपावन पुरूष हैं– पर डरते हुए भी उनका विरोध करते हैं, उनके वचन को स्वीकार नहीं करते। **(सन्त मारकुस 1:24; 3:11)** वे उनकी अधीनता स्वीकार नहीं करते पर उन्हें उनके अधिकार व शक्ति के आगे घुटने टेकना पड़ता है। और क्या आप विश्वास करते हैं कि केवल एक ईश्वर है। अच्छा करते हो। दुष्टात्मा भी ऐसा विश्वास करते हैं, किन्तु काँपते रहते हैं। **(सन्त याकूब 2:19)** शैतान जल्द ही प्रभु को पहचान सकता है, चमत्कार व चिन्ह दिखा सकता है, पवित्र बाइबिल बिना देखे पढ़ सकता है, स्वर्गदूत का रूप धारण कर सकता है, मीठी-मीठी बातें बोलकर बहका सकता है, प्रेम का ढोंग रच सकता है और भ्रम में डाल सकता है पर वह एक काम नहीं कर सकता– वह क्रूस नहीं उठा सकता। वह झूठ बोल सकता है, पर अपमान और दर्द नहीं सह सकता, विनम्र और आज्ञाकारी नहीं बन सकता। इसलिए पिता परमेश्वर ने संसार को बचाने के लिए व अपने प्रेम को दर्शाने के लिए अपने पुत्र को मानव रूप में भेजा और क्रूस के मार्ग को अपनाया जिसे शैतान अपना नहीं सकता। येशु ने विनम्र और आज्ञाकारी बन क्रूस का आलिंगन किया, चुपचाप अपमान और अत्याचार सहा और अपना सारा बहुमूल्य रक्त हमारी मुक्ति के लिए बहा दिया। क्रूस के रास्ते को अपनाने वाला शैतान की सन्तान नहीं हो सकता, वह पिता परमेश्वर का प्रिय पुत्र ही होगा। क्रूस ही उसकी पहचान होगी। इसलिए उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, **"जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जो अपना जीवन सुरक्षित रखना चाहता है, वह उसे खो देगा और जो मेरे कारण अपना जीवन खो देता है, वह उसे सुरक्षित रखेगा। (लूकस 9:23-24)**

यह क्रूस उठाना हम सबके लिए इस तरह अनिवार्य है यदि हम येशु के शिष्य कहलाये जाना चाहते हैं क्योंकि जिस प्रकार घरिया चाँदी की और भट्ठी सोने की परख करती है, उसी प्रकार प्रभु हृदय की परख करता है। दुःखों की घरिया में धर्मियों/सन्तों की परख होती है। **(सूक्ति 17:3; प्रज्ञा 3:4-6)** सन्तों की सहभागिता को प्राप्त करने के लिए क्रूस के मार्ग से होकर जाना पड़ेगा, महिमामय मुकुट प्राप्त करने के लिए पहले काँटों का मुकुट पहनना पड़ेगा। यह हम जान लें कि इस धरती पर इस जीवन में कष्ट और दुःख, परीक्षाएँ और प्रलोभन अल्प समय के लिए ही हैं। स्वर्ग में अनन्त जीवन की तुलना में यह कुछ भी नहीं। स्वर्ग के अनन्त शान्ति और प्रेम की तुलना में यह अल्पकालीन दुःख की परीक्षा हमारे विश्वास और आशा को डिगाने के लिए नहीं, बल्कि उसे प्रभु की सहायता व कृपा द्वारा मज़बूत बनाने के लिए है। बिना दुःख व कष्ट के महिमा का महत्त्व नहीं है, महिमा प्राप्त करने की योग्यता नहीं मिलती। इसलिए सन्त पौलुस कहते हैं, **"यदि हम उनके साथ दुःख**

शेष भाग प ष्ठ 2 पर ★

कृपया ध्यान दें: इस वर्ष उपवास और प्रार्थना का चालीसा काल राख-बुधवार के दिन से, अर्थात् फरवरी 25 से शुरू होगा और पुण्य शुक्रवार, यानि अप्रैल 10 को समाप्त होगा।

दुःखों के तलवार से भेदे माता मरियम के शोक -सन्तप्त हृदय से प्रार्थना

हे अत्यन्त दुःखी कुँवारी मरिया! हे दया व ममता के सागर! जिन्होंने अपनी ही आँखों से मेरे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने प्रिय पुत्र को घोर यन्त्रणा सहते देखा और अंत में उन्हें क्रूस पर प्राण त्यागते हुए व सबके लिए प्रार्थना करते हुए देखा, तूने उसी क्रूस के नीचे रोते हुए मेरे लिए प्रार्थना की और अपने पुत्र को खोकर तू मेरी माँ व बिचवई बन गई।

हे मरिया के शोक-सन्तप्त हृदय! तू अपने प्रेम से मेरा हृदय स्पर्श कर दे जिससे उस में प्रभु मसीह के प्रति अनन्य भक्ति, प्रेम व आज्ञाकारिता उत्पन्न हो जाये। क्रूस का चित्र मेरे हृदय-पटल पर सदा के लिए अंकित कर दे जिससे मैं हर बुराई व प्रलोभन से बचकर पाप व शैतान पर विजय प्राप्त कर सकूँ। आपके पुत्र ने मेरे लिए दुःख उठाया व अपने प्राण न्यौछावर किये हैं। इसलिए, हे माँ, मुझे ऐसी कृपा दे कि मैं कृतज्ञ भाव से अब से उसके लिए ही अपना जीवन बिताऊँ, उसी के अधीन रहूँ, उसके क्रूस पर गर्व करूँ, उसकी महिमा के लिए सब कार्य करूँ, उसके दुःख का सहभागी बनूँ जिससे अन्त में मैं स्वर्ग का अनन्त जीवन प्राप्त कर सकूँ। आमेन।

प्रभु यह कहता है, "अब तुम लोग उपवास करो और रोते तथा शोक मनाते हुए पूरे हृदय से मेरे पास लौट आओ"। अपने वस्त्र फाड़ कर नहीं, बल्कि हृदय से पश्चाताप करो और अपने प्रभु-ईश्वर के पास लौट जाओ...(योएल 2:12-13)

प ष्ठ 1 का शेष भाग ★

भोगते हैं, तो हम उनके साथ महिमान्वित होंगे।" (रोमियों 8:17) "ईश्वर ने, जो सम्पूर्ण अनुग्रह का स्त्रोत है, आप लोगों को मसीह द्वारा अपनी शाश्वत महिमा का भागी बनने के लिए बुलाया। वह, आपके थोड़े ही समय तक दुःख भोगने के बाद, आप को परिपूर्ण, सुस्थिर तथा स द ढ़ बनायेगा।"(1पेत्रुस 5:10)

जब उन्होंने हमारे लिए अपने जीवन को अर्पित किया, तो अब हमारा भी यही कर्तव्य बनता है कि हम भी अपने जीवन को उनकी इच्छा व कार्यों के लिए समर्पित करें जिससे हम भी उनके जैसे अनन्त जीवन प्राप्त कर लें।**(रोमियों 6:11,13)** सन्त पेत्रुस यह लिखते हैं– **"इसलिए तो आप बुलाये गये हैं, क्योंकि मसीह ने आप लोगों के लिए दुःख भोगा और आप को उदाहरण दिया, जिससे आप उनका अनुसरण करें। (1 पेत्रुस 2:21)**

उनका अनुसरण करने पर जब प्रभु हमारे माध्यम से अपना कोई भी कार्य करवाना या प्रवचन या भविष्यवाणी पूरा करना चाहता है, तो इसे पूरी करने के लिए हमें कोई दुःख, बीमारी या तकलीफ उठानी पड़े, अपमान, अत्याचार या झूठे आरोपों का सामना क्रूस के रूप में करना पड़े, तो हमें वह खुशी से उठाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। इस तरह हम प्रभु के दुःखभोग में सहभागी बन जाते हैं। और ऐसे लोगों से प्रभु कहते हैं, **"धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारा अपमान करते हैं तुम पर अत्याचार करते और तरह-तरह के झूठे आरोप लगाते हैं। खुश हो और आनन्द मनाओ-स्वर्ग में तुम्हें महान पुरस्कार प्राप्त होगा।" (सन्त मत्ती 5:11-12)**

इस तरह "**जो धैर्य से दुःख भोगता व अन्याय सहता है क्योंकि वह समझता है कि ईश्वर यही चाहता है, वह पुण्य का काम करता है। ईश्वर की द ष्टि में यह पुण्य कर्म है।"(1 पेत्रुस 2:19-20)**

यह भी लिखा है, **"यदि किसी को मसीही होने के नाते दुःख भोगना पड़े तो उसे लज्जित नहीं होना चाहिए, बल्कि वह ईश्वर की महिमा के लिए इस नाम को स्वीकार करे..." (1 पेत्रुस 4:16)**

हमें अपने जीवन में आत्मत्याग करने की आवश्यकता है। प्रार्थना एवं उपवास करते हुए हम अपने स्वार्थ, अंहभाव, सांसारिक इच्छाओं, चिन्ताओं इत्यादि को त्याग दें। हम केवल ईश्वर की इच्छा व आज्ञाओं को सर्वश्रेष्ठ महत्त्व दें जिससे हम ईश्वर के महिमा के पात्र बन जायें जिनके विषय में वह यह कहे, **"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिसपर मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"**

क्रूस का रास्ता,एक मसीही का रास्ता

हमारे पापों के बोझ के कारण जो प्रभु येशु ने दुःख उठाये, पीड़ा और अपमान सहे, कोड़ों की मार खाई, अपनी स ष्टि द्वारा तिरस्क त तथा उपहासित किये गये– उन सबका मूल्य हम कभी नहीं चुका सकते। पर हम इस अनुग्रह को सदा याद ज़रुर रखने की कोशिश कर सकते हैं। इसलिए हम प्रभु के इस दुःखभोग को, असह्य पीड़ा के क्षणों को, **"क्रूस का रास्ता"** की **प्रार्थना** द्वारा याद करते, (विशेषतः चालीसा के उपवास काल में) पश्चाताप भरे हृदय से अपने पापों की क्षमा माँगते और उनकी दया, क्षमा, उदारता और प्रेम के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं। इस **दर्द-भरे क्रूस यात्रा** को चौदह मुख्य स्थानों में बाँटा गया है जिन पर हम प्रभु येशु के दुःखभोग पर मनन-चिन्तन कर प्रभु के साथ-साथ कलवरी पहाड़ की ओर चलेंगे। जैसे प्रभु भारी क्रूस अपने कंधों पर उठाकर चले, निष्पापी होकर भी अपने पिता की इच्छा पूर्ण की और ईश्वरीय महिमा प्राप्त की वैसे ही हमें भी अपने जीवन की कठिनाईयों, दुःखों एवं पीड़ाओं व ज़िम्मेदारियों को अपने आप उठाकर प्रभु पर भरोसा रख उनके पीछे-पीछे चलना होगा।

प्रभु येशु ने इसलिए यह कहा है, **"जो अपना क्रूस उठाकर मेरा अनुसरण नहीं करता, वह मेरे योग्य नहीं।"(मत्ती 10:38)**

कृपया ध्यान दें: प्रत्येक स्थान का वर्णन एक लघु गीत द्वारा कर प्रार्थनाँए की जाती हैं व उस पर मनन-चिन्तन किया जाता है। इस प्रार्थना को करने के तरीके व गीत की धुन को आप जीवन-धाम (सैक्टर-22) में आकर सीख सकते हैं जहाँ हर बुधवार (प्रातः10 बजे के मिस्सा बलिदान के बाद) और शुक्रवार(दोपहर 2 बजे के बाद) चालीसा काल में यह प्रार्थना की जाती है।

प्रारम्भ गीत

क्रूस पर जान देने वाले,
मरकर विजय प्राप्त करने वाले
आँसू बहाते हुए, चलते हैं तेरे पीछे-पीछे हम
शिष्य बनने की आशा हम करते हैं
तेरे, ओ जग के स्वामी!
तूने कहा है – "क्रूस अपना उठाके
मेरे पीछे तुम हो लो"
धो देना मेरे पापों को अपने
लहू से, हे जग के स्वामी! (2)

प्रारम्भ प्रार्थना

हे प्रेमी पिता, तूने इस संसार को इतना प्यार किया कि उसकी मुक्ति के लिए अपने एकलौते पुत्र को दे दिया। हम तुझे लाखों बार धन्यवाद देते हैं।

है प्रभु येशु तूने हमारी मुक्ति के लिए अपने आप को कुर्बान कर दिया। तूने हमे अंतिम क्षण तक प्रेम किया। असीम प्रेम। तूने हमें अपना मित्र कहा। यह कहा कि अपने मित्रों के लिए प्राण देने से बढ़कर कोई प्रेम नहीं है। पिलातुस के महल से कलवरी पहाड़ तक क्रूस ढोकर तूने जो अन्तिम यात्रा की, वह तेरे महान प्रेम की ही अभिव्यक्ति है। आँसुओं और आहों से भरे इस रास्ते से अपनी व्याकुल माता माँ मरियम के संग एक तीर्थ यात्रा के रुप में हम भी तेरा अनुगमन करते हैं। हम पर क पा कर कि तेरे दुःख भोग पर मनन-चिन्तन करते समय तेरे कष्टों तथा संकटों की छाप हमारे हृदय पर पड़े। हमें धैर्य एवं सहनशक्ति प्रदान कर जिससे हम भी अपने जीवन के क्लेशों तथा दुःख-संकटों को खुशी-खुशी सह सकें, उसे ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर सकें, दूसरों के दर्द और दुःख को हल्का कर उन्हें भी तेरी मुक्ति के इस राह पर ला सकें और स्वंय तेरे साथ महिमा में प्रवेश कर सकें।

हे प्रभु दया कर। हे ख्रीस्त दया कर। हे पवित्र माँ, तेरे पुत्र के क्रूस के पीछे आने के लिए, हमारे लिए प्रार्थना कर।

पहला स्थान :

येशु को प्राण दण्ड देने की आज्ञा मिलती है।

म त्यु दण्ड़ दिया गया,
स्वर्ग से उतरे इस मेमने को
निष्पापी ईश पुत्र को लोगों ने
अपराधी घोषित किया,
निर्दोष होकर भी, पावन होकर भी
पापों को तुझपे रोंपा।
दया तूने जिसपर की, उसे ही दिल को
तेरे भारी दुःख पहुँचाया
न्याय के दिन तू दया हमपे करना,
स्वर्ग में स्थान हमें देना (2)

प्रार्थनाँए : (हर स्थान पर)

हे ख्रीस्त हम तेरी आराधना करते हैं। हम तुझे धन्य कहते हैं, क्योंकि तूने अपने पवित्र क्रूस द्वारा हमें बचाया है। (दण्डवत करें)

दुःख भोग पर मनन-चिन्तन व दया याचना।

हे पिता हमारे... प्रणाम मरिया...

हे प्रभु दया कर। हे ख्रीस्त दया कर। हे पवित्र माँ, तेरे पुत्र के क्रूस के पीछे आने के लिए हमारे प्रार्थना कर।

...क्योंकि वह करूणामय, दयालु, अत्यन्त सहनशील और दयासागर है और वह सहज ही द्रवित हो जाता है। क्या जाने, वह द्रवित हो जाये और तुम्हें आशीर्वाद प्रदान करे। (योएल 2:13-14)

दूसरा स्थान :

येशु के कन्धे पर क्रूस लादा जाता है।

कन्धों पर क्रूस उठाके, सबके पापों को उठा लिया।
चलते हैं धीरे-धीरे अपनी निन्दा को सुनते हुए।
तुम लोगों के संग ऐसा मैंने क्या किया, जो मुझे क्रूस दे दिया।
मधु की नदियाँ जहाँ बहती रहती थीं, वहाँ तुमको मैं लाया था।
भूल गए तुम सब लोग उन सब खुशियों को, ठेस पहुँची
मेरी आत्मा को। (2) **प्रार्थनाँए**

तीसरा स्थान :

येशु पहली बार क्रूस के साथ गिरते हैं।

भारी क्रूस उठाने की क्षमता अब येशु में न रही।
पत्थर भरी राह पर, वह लड़खड़ा कर गिर पड़े।
पवित्र चरणों ने ठोकर ऐसी खाई, माथे पर है चोट आई,
न है आकाश में, न कोई भूमि पर, जो तेरा क्रूस उठाये
करते नमन उन चरणों को हम सब रोकर करते
हैं पश्चाताप। (2) **प्रार्थनाँए**

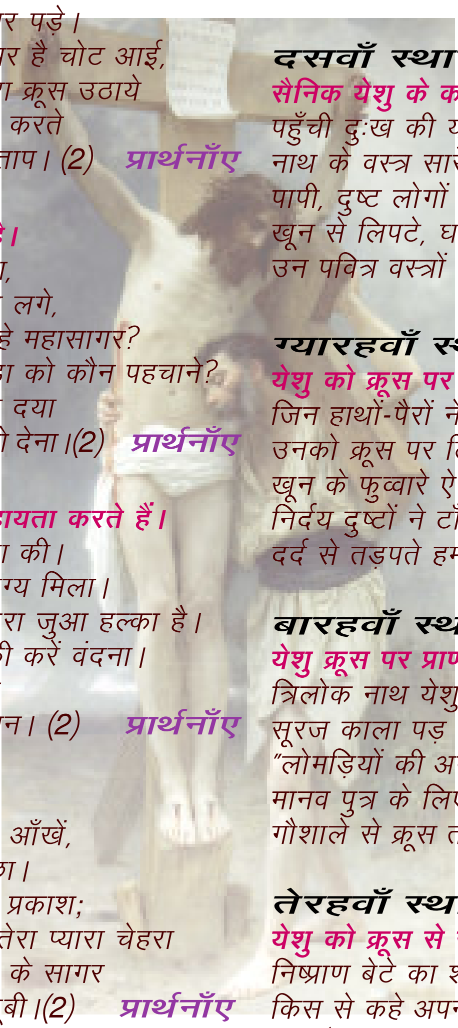

चौथा स्थान :

येशु की उनकी दुःखी माँ से भेंट होती है।

रोती हुई आई माँ को प्रभु ने मुड़कर देखा,
आपस में आँखें मिली, दुःख से आँसू बहने लगे,
किससे मैं तेरी तुलना ऐसे करूँ, दुःख के हे महासागर?
दिल के तुम्हारे दुःख को कौन जाने? पीड़ा को कौन पहचाने?
आँसुओं से अपने, हमारे गुनाहों को, तू ही दया
कर धो देना।(2) **प्रार्थनाँए**

पाँचवाँ स्थान :

किरनी सिमोन क्रूस ढ़ोने में येशु की सहायता करते हैं।

क्रूस ढ़ोते येशु की सिमोन ने अब सहायता की।
प्रभु के क्रूस ढ़ोने का सिमोन को यूँ सौभाग्य मिला।
क्रूस तेरा महिमामयी और सुखदायी है, तेरा जुआ हल्का है।
दुःखियों को आश्रय देने वाले उस क्रूस की करें वंदना।
राजाओं के राजा, क्रूस उठा लें तेरा, देना
हमें यह वरदान। (2) **प्रार्थनाँए**

छठवाँ स्थान :

वेरोनिका येशु का चेहरा पोंछती है।

खून से भरा वह चेहरा, और क्षीण हुई वो आँखें,
वेरोनिका ने बढ़कर प्रभु के चेहरे को पोंछा।
आनन्द देता स्वर्गदूतों को ऐसा तेरा दिव्य प्रकाश;
ताबोर पर्व पर, सूर्य समान उज्जवल था तेरा प्यारा चेहरा
आज उस मुख पर फीकी है ज्योति, दुःख के सागर
में जो डूबी।(2) **प्रार्थनाँए**

सातवाँ स्थान :

येशु दूसरी बार क्रूस के साथ गिरते हैं।

दोपहर की तेज धूप से और कोड़ों की मार से
चलना और मुश्किल हुआ – रक्षक फिर से धरती पर गिरा;
लोगों के पापों ने तुझको गिरा दिया, तुझे दुःख दर्द दिया।
पापों से हमारे, क्रूस हुआ और भारी, उठाना और मुश्किल हुआ।
छूते तेरे चरण, करना हम पर रहम, सच्चे दिल
से करते पश्चाताप। (2) **प्रार्थनाँए**

आठवाँ स्थान :

येरुसालेम की स्त्रियाँ येशु के लिए रोती-कलपती हैं।

"येरुसालेम की पुत्रियों, तुम मेरे लिए क्यों रोते हो?
अपने और अपने पुत्रों के लिए तुम आँसू बहाओ।"
कहते हैं ऐसे सबको प्रभु येशु, चुप रहकर सब सहते हैं।
दुःख की है घड़ियाँ, देख कर स्त्रियाँ, घुट-घुट कर सब रोती हैं।
रोना तुम अपने पापों के लिए, देते यूँ सबको दिलासा।(2)
प्रार्थनाँए

नौवाँ स्थान :

येशु तीसरी बार क्रूस के साथ गिरते हैं।

मानव पुत्र का शरीर अब निर्बल होता जा रहा।
क्रूस के साथ पत्थरों पर तीसरी बार प्रभु गिर पड़े।
मोम की तरह उनका दिल है पिघलता, सारा बदन है टूट गया।
सूखी जुबान है, सूखा गला है, न फिर भी शिकवा गिला
सहने की ताकत अब नहीं उनमें, म त्यु
करीब आई उनके। (2) **प्रार्थनाँए**

दसवाँ स्थान :

सैनिक येशु के कपड़ों को उतारते हैं।

पहुँची दुःख की यह यात्रा कलवरी पहाड़ के ऊपर,
नाथ के वस्त्र सारे शत्रुओं ने उतार लिए
पापी, दुष्ट लोगों ने उनको है घेरा, उनपर ऐसा जुल्म है ढ़ाया,
खून से लिपटे, घावों से चिपके, कपड़ों को खींच उतारा।
उन पवित्र वस्त्रों को, उन श्वेत वस्त्रों को, उन्होंने
आपस में बाँटा।(2) **प्रार्थनाँए**

ग्यारहवाँ स्थान :

येशु को क्रूस पर कीलों से ठोंका जाता है।

जिन हाथों-पैरों ने लोगों को है मुक्ति दिलाई,
उनको क्रूस पर लिटाया, हाथों-पैरों को कील से ठोंका,
खून के फुव्वारे ऐसे बहने लगे, दर्द की सीमा न रही।
निर्दय दुष्टों ने टाँगा उन्हें क्रूस पे, वह ईश्वर का बलित मेमना,
दर्द से तड़पते हमारे मसीहा, हमारी सजा
हैं वह पाते। (2) **प्रार्थनाँए**

बारहवाँ स्थान :

येशु क्रूस पर प्राण त्याग देते हैं।

त्रिलोक नाथ येशु ने क्रूस पर जीवन को त्याग दिया।
सूरज काला पड़ गया, चहुँ ओर अँधेरा छा गया।
"लोमड़ियों की अपनी-अपनी है माँदे, पक्षियों के अपने घोंसले,
मानव पुत्र के लिए कोई जगह नहीं है, जो उनका सिर भी ढ़के
गौशाले से क्रूस तक, निर्धन रहे वह, हैं वो
गरीबों के मसीहा।(2) **प्रार्थनाँए**

तेरहवाँ स्थान :

येशु को क्रूस से उतारा जाता है।

निष्प्राण बेटे का शरीर रख लिया माँ ने आँचल में,
किस से कहे अपना दुःख? दर्द का सागर उमड़ पड़ा।
एक तेज तलवार ह्रदय को है चीरती, दर्द इतना तू है सहती,
उस दुःख के पल में कौन दिलासा देगा? कौन तेरे आँसु पोंछेगा ?
जैसे तूने पूरी की इच्छा पिता की ऐसी मैं भी
कर सकूँ हे माँ।(2) **प्रार्थनाँए**

चौदहवाँ स्थान :

येशु कब्र में रखे जाते हैं।

प्रेमी प्रभु का म त देह उनके चेलों ने दफना दिया
म त्यु पर विजयी होगा, कब्र में है जीवन का जो स्त्रोत।
एकलौता पुत्र है तू परमेश्वर का, दूतों के बीच तू जन्मा;
क्रूस मरण द्वारा हमें पापमुक्त किया, सच्चा प्रेम हमें दिखाया।
तीन दिन पश्चात् तू जी उठेगा, सब बंधन
तू तोड़ देगा। (2) **प्रार्थनाँए**

शेष भाग प ष्ठ 4 पर

प्रभु यह कहता है, "मैं जो उपवास चाहता हूँ, वह इस प्रकार है- अन्याय की बेड़ियों को तोड़ना, जूए के बन्धन खोलना, पददलितों को मुक्त करना और हर प्रकार की गुलामी समाप्त करना। अपनी रोटी भूखों के साथ खाना, बेघर दरिद्रों को अपने यहाँ ठहराना। जो नंगा है, उसे कपड़े पहनाना और अपने भाई से मुँह नहीं मोड़ना।"(इसायाह 58:6-7)

शादी के कई वर्षों बाद इन निस्सन्तान दम्पत्तियों को प्रभु ने सन्तान का दान दिया!

समापन गीतः

पृष्ठ 3 का शेष भाग

प्रभु ने प्रेम किया, अपना सर्वस्व अर्पित किया
कितना है कष्ट सहा, फिर भी देता हमें आशीर्वाद।
चन्दन-सी काया की निन्दा की हमने, हमने तुझे क्रूस पर चढ़ाया
क्षमा करना हमको, निर्दय थे हम लोग, आभार भी प्रकट नहीं किया,
तेरे दुःख को करके याद आँसु बहाने का, दे दे तू हमको वरदान। (2)

मिस्सा बलिदान का समयः

मकान न०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में हर इतवार - शाम 6:30 बजे प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। मंगलवार को मिस्सा प्रातः 6:30 बजे चढ़ाया जाता है। 24 घण्टों की लगातार चलती पवित्र आराधना में आप भी हमारे साथ भाग ले सकते हैं।

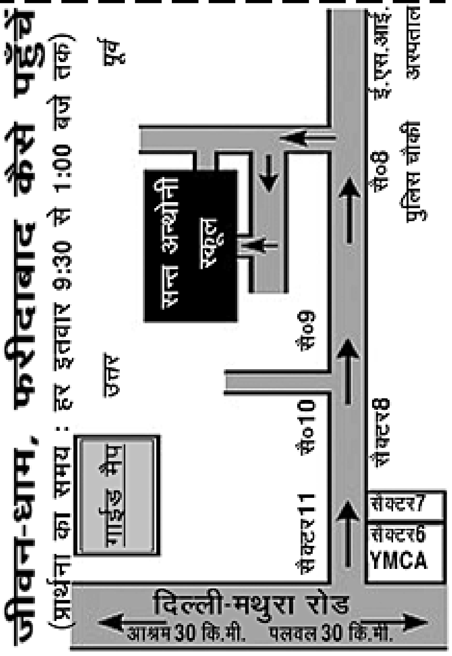

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

10) कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र c) अध्याय 7-9

सन्त पौलुस द्वारा कुरिन्थ की कलीसिया को लिखे इस पहले पत्र के तीसरे तीन अध्यायों **(अध्याय 7-9)** से लिये गये इन निम्नलिखित वाक्यों में आपने रिक्त स्थान भरने हैं तथा उत्तर में उनकी वाक्यांश संख्या भी अध्याय सहित बतलानी है।

1) ______हमें ______ का _______नहीं?
2) ______एक______जिस______में बुलाया गया है, वह _____में रहे।
3) ___समझता____ कि वर्तमान______में यही अच्छा है कि ______जिस ______में है, उसी ______में रहे।
4) अब______को अर्पित____के_____ में।
5) ____अपने_____के____अपने______ का पालन करे और ______अपने ______के प्रति।
6) मैं ______के लिए ______-जैसा _____, जिससे मैं ______उद्धार कर _____।
7) ______हमें______के_____नहीं______ सकता।
8) जो ______है, वह ______की _____की ______करता है।
9) क्या _____को _____की _____है या वह _____लिए यह _______है?
10) ________को अर्पित _____खाने के ______में हम जानते हैं कि _____भर में _______में किसी __________का ______ नहीं है – एकमात्र ______के अतिरिक्त कोई और _______नहीं है।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

10) कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र b) अध्याय 4-6

1) धोखे, व्यभिचारी, परस्त्रीगामी, पुरुषगामी, लोभी, निन्दक, ईश्वर, अधिकारी।(6:9-10)
2) इसलिए, ख़मीर, दुष्टता, ख़मीर, बेख़मीर, पर्व।(5:8)
3) हम, भूखे, प्यासे, फटे-पुराने, मार, भटकते।(4:11)
4) क्या, भाई, भाई, अदालत, मुक़दमा।(6:6)
5) अन्धकार, प्रकाश, हृदयों, अभिप्राय।(4:5)
6) 'भाई', व्यभिचारी, मूर्तिपूजक, शराबी, धोखेबाज़, भोजन।(5:11)
7) आप, लाठी, आपके, प्रेम, कोमलता।(4:21)
8) पाप, शरीर, व्यभिचार, शरीर, पाप।(6:18)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सति) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।
ङ) सहीं उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित...........हैं ?
क्या आप दुःखी...........हैं ?
क्या आप रोगी...........हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति...........है ?

आपको सान्त्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

येशु ने कहा, "जब तक दूल्हा साथ है, क्या बाराती शोक मना सकते हैं? किन्तु वे दिन आयेंगे, जब दुल्हा उन से बिछुड़ जायेगा। उन दिनों वे उपवास करेंगे।"(मत्ती 9:15)

Edited & Published by Anthony, JEEVAN DHAM, 696/Sec-22, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.